



GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLAGE RAJNANDGAON



DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

शीर्षक:- भारत और गुटनिरपेक्ष आंदोलन (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)

Presented by
Mr. Deepak Kumar
Assistant Professor
(Guest Lecturer)

अध्याय:-

1. प्रस्तावना
2. अर्थ एवं परिभाषा
3. गुट निरपेक्ष आंदोलन का निर्माण
4. संगठनात्मक संरचना और सदस्यता
5. भारत की गुट निरपेक्ष नीति
6. भारत द्वारा गुटनिरपेक्ष नीति अपनाए जाने के कारण
7. भारत की गुट निरपेक्ष आंदोलन में तृतीय विश्व के अग्रणी देश के रूप में भूमिका
8. निष्कर्ष



NAM

Non-Aligned Movement

Why in news? | India participated in the NAM meeting, held virtually recently.

Non-Aligned Movement

- It is a group of 138 developing world states, not formally aligned with or against any major power bloc.
- The largest grouping of states worldwide after the UN.

Non-Aligned Movement: Founding Fathers



JAWAHAR NEHRU
(India)



GAMAL ABDEL NASSER
(Egypt)



KWAME NKURUMAH
(Ghana)



ABDUL KADER



JAWAHAR LAL NEHRU

Origin

- Originated in the 1950s as an effort by some countries to avoid the polarized world of the Cold War.
- First Summit Conference took place in 1961.
- Leaders: Pandit Jawahar Lal Nehru, President of Egypt Gamal Abdel Nasser, and the President of Yugoslavia Josip Broz Tito.

Purpose

- No formal alignment with either of the great powers.
- Provided a platform for newly independent developing nations to join together to protect their autonomy and to avoid racism and imperialism.

Five principles that serve as the basis of the Non-Aligned Movement are

- Mutual respect for territorial integrity and sovereignty.
- Mutual non-aggression.
- Mutual non-interference in domestic affairs.
- Equality and mutual benefit.
- Peaceful co-existence.

Visit: ndia.org or Download the NAM Profile



प्रस्तावना:-

गुट निरपेक्ष आन्दोलन का जन्म द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की प्रमुख राजनीतिक घटनाओं में से एक है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व का **साम्यवादी** व **पूँजीवादी** गुटों में यह शीत युद्ध अमेरिकी और रूसी गुट के बीच ऐसी प्रतिस्पर्धा का प्रकट रूप माना जा सकता है जो विश्व शान्ति के लिए महान खतरा पैदा कर सकता था।

तृतीय विश्व के रूप में अलंकृत सभी नवोदित स्वाधीन 'देशों' को शीत युद्ध के खतरे से बचाने के लिए विश्व के प्रबुद्ध व **साम्राज्यवाद के शिकार** रह चुके देशों का यह परम कर्तव्य माना गया कि वे स्वाधीनता के मार्ग पर चल रहे देशों तथा स्वयं की सम्प्रभुता की रक्षा करें। इसके लिए यह जरूरी था कि **एशिया, अफ्रीका तथा लेटिन अमेरिका** के उन सभी देशों को इस सैनिक गुटबन्दी से दूर रखा जाए जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उभर रही थी।

ऐसे वातावरण में **भारत** ने **मिश्र** तथा **यूगोस्लाविया** के साथ मिलकर अपनी बौद्धिक क्षमता का परिचय देते हुए गुटनिरपेक्षता के सिद्धान्त की प्रतिस्थाना की। आगे चलकर यही सिद्धान्त **विश्व शान्ति** का प्रबल समर्थक, तृतीय विश्व की **स्वाधीनता का मार्गदर्शक** तथा एक महान आन्दोलन बन गया । भारत के नेतृत्व में जन्म लेने वाला यह सिद्धान्त है जो भारत के अपने पड़ोसी देशों तथा विश्व के अन्य देशों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों तथा विदेश नीति का निर्धारण करता है।

अर्थ एवं परिभाषा :-

गुटनिरपेक्षता की नीति का प्रारम्भिक अर्थ था- गुटों की राजनीति से दूर रहना, दोनों गुटों (अमेरिकी व रूसी) के साथ मित्रता रखना, किसी के साथ भी सैनिक संधियां न करना और एक स्वतन्त्र नीति का विकास करना।

गुटनिरपेक्षता को परिभाषित करते हुए **पंडित जवाहर लाल नेहरू** ने कहा है- "गुटनिरपेक्षता का अर्थ है-अपने आप को सैनिक गुटों से दूर रखना तथा जहां तक सम्भव हो तथ्यों को सैनिक दृष्टि से न देखना। यदि ऐसी आवश्यकता पड़े तो स्वतन्त्र दृष्टिकोण रखना तथा दूसरे देशों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखना।"

कुछ विद्वानों ने इसे शीत युद्ध के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया का नाम दिया है, क्योंकि इसका जन्म ही शीत युद्ध की परिस्थितियों की देन है।

गुटनिरपेक्षता शब्द की वैज्ञानिक व्याख्या करते हुए **लिस्का** ने कहा है कि सबसे पहले यह बताना जरूरी है कि गुटनिरपेक्षता तटस्थता नहीं है। इसका अर्थ है-उचित और अनुचित का भेद जानकर सही का साथ देना।

गुट निरपेक्ष आंदोलन का निर्माण:-

गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के निर्माण का आधार 1955 का बांडुंग सम्मेलन था, और इसकी औपचारिक स्थापना 1961 में यूगोस्लाविया के बेलग्रेड में पहले शिखर सम्मेलन के साथ हुई, जिसमें भारत के जवाहरलाल नेहरू, मिस्र के गमाल अब्देल नासिर, यूगोस्लाविया के जोसिप ब्रोज़ टीटो, घाना के क्वामे नक्रूमा और इंडोनेशिया के सुकर्णो जैसे नेताओं ने भूमिका निभाई। इस आंदोलन का उद्देश्य महाशक्तियों के गुटों से अलग रहते हुए स्वतंत्रता और शांति बनाए रखना था, न कि किसी विशेष गुट का हिस्सा बनना।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन का निर्माण

बांडुंग सम्मेलन (1955): गुटनिरपेक्ष आंदोलन की अवधारणा इंडोनेशिया में 1955 में आयोजित बांडुंग सम्मेलन के दौरान रखी गई थी।

संस्थापक नेताओं का नेतृत्व: शीत युद्ध के दौर में, भारत, यूगोस्लाविया, मिस्र, घाना और इंडोनेशिया के नेताओं ने मिलकर यह पहल की।

बेलग्रेड सम्मेलन (1961): इन प्रयासों के परिणामस्वरूप 1961 में यूगोस्लाविया की राजधानी बेलग्रेड में पहला गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया।

उद्देश्य: इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य था कि नव-स्वतंत्र राष्ट्र किसी महाशक्ति के गुट में शामिल हुए बिना अपनी स्वतंत्रता और तटस्थता बनाए रखें।

संस्थापक: जवाहरलाल नेहरू, गमाल अब्देल नासिर, जोसिप ब्रोज़ टीटो, क्वामे नक्रूमा और सुकर्णो को गुटनिरपेक्ष आंदोलन के संस्थापक पिता माना जाता है।

सिद्धांत: गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सिद्धांत महाशक्तियों के गुटों में शामिल न होने, राष्ट्रीय संप्रभुता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर केंद्रित थे।

संगठनात्मक संरचना और सदस्यता:-

यह आंदोलन किसी भ-राजनीतिक/सैन्य ढाँचे में बंधे नु रहने की इच्छा से उपजा है और इसलिए इसका कोई बहुत सख्त संगठनात्मक ढाँचा नहीं है। [3] 1996 के कार्टाजेना दस्तावेज आन मेथोडोलोजी में कुछ संगठनात्मक बनियादी बातों को परिभाषित किया गया था। [35] गटनिरपेक्ष राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्षों या शासनाध्यक्षों का शिखर सम्मेलन "सर्वोच्च निर्णय लेने वाला प्राधिकारी" है। अध्यक्षता देशों के बीच घूमती रहती है और राष्ट्राध्यक्षों या शासनाध्यक्षों के प्रत्येक शिखर सम्मेलन में शिखर सम्मेलन का आयोजन करने वाले देश में बदल जाती है। [35]

गटनिरपेक्ष आंदोलन की सदस्यता के लिए आवश्यक शर्तें संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख मौन्यताओं से मेल खाती हैं। वर्तमान आवश्यकताएं यह हैं कि उम्मीदवार देश ने 1955 के दस "बांडुंग सिद्धांतों" के अनुरूप आचरण प्रदर्शित किया हो: [35]

मौलिक मानव अधिकारों और संयुक्त राष्ट्र चार्टर

1. उद्देश्यों और सिद्धांतों के प्रति सम्मान ।
2. सभी राष्ट्रों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान।
3. राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए आंदोलनों को मान्यता।
4. सभी जातियों की समानता तथा सभी राष्ट्रों, चाहे वे बड़े हों या छोटे, की समानता को मान्यता।
5. किसी अन्य देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप या दखलंदाजी से परहेज।
6. संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अनुरूप, प्रत्येक राष्ट्र के अकेले या सामूहिक रूप से अपनी रक्षा करने के अधिकार का सम्मान।
7. किसी भी देश की क्षेत्रीय अखंडता या राजनीतिक स्वतंत्रता के विरुद्ध आक्रामकता के कृत्यों या धमकियों या बल प्रयोग से बचना।

भारत की गुट निरपेक्ष नीति:-

भारत गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाने वाला प्रथम राष्ट्र है। भारत ने अपने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान ही इस नीति को अपनाना शुरू कर दिया था। 1936 में नेहरू जी ने कांग्रेस के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए कहा था कि "भारत साम्राज्यवादी तथा फासीवादी ताकतों के विरुद्ध है। भारत उन शक्तियों का साथ दे सकता है जो इन बुराईयों के विरुद्ध है।"

अपनी स्वतंत्रता के बाद भी भारत ने यही दृष्टिकोण अपनाया। उसने अमेरिकी (पंजीवादी) तथा रूसी (साम्यवादी) सैनिक गटों के विरुद्ध एक ऐसी तीसरी शक्ति (Third Power) का विकास करने पर जोर दिया जो साम्राज्यवादी तथा उपनिवेशवादी ताकतों से तृतीय विश्व की सुरक्षा कर सकें। इसके लिए भारत ने गुट निरपेक्षता के सिद्धान्त का प्रतिपादन करके विश्व के स्मरण नव-स्वाधीन देशों की राष्ट्रीय सम्प्रभुता (National Sovereignty) की रक्षा का बीड़ा उठाया।

भारत से स्पष्ट किया कि भारत शीत युद्ध की राजनीति युद्ध से अलग रहते हुए भी दोनों गुटों से अपनी मैत्री बनाए रखेगा और उनकी बिना शर्त सहायता से वह अपनी उन्नति करने में तैयार रहेगा।

भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति का ध्येय किसी तीसरी शक्ति का नेतृत्व करना नहीं रहा है, बल्कि शीत युद्ध (World war) के वातावरण से तीसरी दुनिया के देशों को बचाकर विश्व शान्ति की स्थापना के प्रयास ही अधिक रहे हैं।

भारत ने हमेशा विश्व शान्ति के लिए अमेरिकी तथा रूसी गुट में समन्वय पैदा करने का प्रयास किया है। उसने शीत युद्ध को गर्म युद्ध में परिवर्तित होने से रोका है। उसने शान्त बैठकर तमाशा देखने की बजाय विश्व शान्ति कायम रखने वाले गुट विशेष की नीतियों के कार्यक्रमों की भी सराहना की है।

भारत ने सैनिक गुटों से स्वयं को दूर रखने का ही प्रयास किया है। भारत द्वारा की गई अधिकतर सन्धियां व समझौते आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक अधिक रही हैं।

भारत द्वारा सैनिक गुटों की गतिविधियों से स्वयं को अलग रखने का तात्पर्य यह नहीं है कि भारत ने सैनिक गुटों के कारनामों के प्रति तटस्थता दिखाई है।

भारत द्वारा गुटनिरपेक्ष नीति अपनाए जाने के कारण:-

- (1) अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति कायम रखना (To maintain Inter national Peace)
- (2) भारत को विश्व की महान शक्ति बनाना (To make India a Great Power)
- (3) आर्थिक विकास का लक्ष्य प्राप्त करना (To Achieve the Goal of Economic Development)
- (4) नव-स्वाधीन देशों की स्वतन्त्रता की रक्षा (To protect the Independence of Newly Independent States)
- (5) अपनी संप्रभुता एवं स्वतंत्रता की रक्षा (To Protect Its sovereignty and Independence)
- (6) स्वतंत्र विदेश नीति की इच्छा (Desire For An Independence Foreign Policy)
- (7) घरेलू परिस्थितियां (Domestic Situation)

भारत की गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में तृतीय विश्व के अग्रणी देश के रूप में भूमिका:-

1. गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की स्थापना (Founder of Non Alignment Movement)
;- भारत गुटनिरपेक्षता के विचार को जन्म देने वाला पहला देश है। सबसे पहले भारत ने इसे शीत युद्ध के वातावरण अर्थात् अमेरिकी तथा रूसी गुटबन्दी स्वयं को दूर रखने तथा विश्व शान्ति की नीति के रूप में अपनाया जो बाद में मिस्र तथा युगोस्लाविया की मदद से एक आन्दोलन में परिवर्तित हो गई। भारत ने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की स्थापना के लिए 1961में एशिया और अफ्रीका के 25 देशों को एक मंच पर एकत्रित किया। 25 देशों का एक मंच पर एकत्रित होना भारत के प्रयासों का ही साकार रूप था। इस प्रयास से ही गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की नींव पड़ी और यह अन्य देशों में भी अपने पैर पसारने में सफल हुआ।
2. (2) नवोदित राष्ट्रों की स्वतन्त्रता का समर्थन (Support to Independence of New State): भारत ने गुट निरपेक्ष आन्दोलन के माध्यम से तीसरी दुनिया के नव स्वतन्त्र देशों की स्वतंत्रता के लिए चलाए जा रहे आन्दोलनों का समर्थन किया। भारत ने सभी नवोदित राष्ट्रों को विदेश नीति के क्षेत्र में स्वतन्त्र दृष्टिकोण विकसित अपनाने का सुझाव दिया। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के प्रमुख देश के रूप में भारत ने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता, उपनिवेशवाद व रंगभेद की समाप्ति को गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का प्रमुख मुद्दा बनाया।

- (3) विश्व शान्ति के विचार का प्रबल समर्थक (Ardent supporter of world Peace) : भारत ने हमेशा ही गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के प्रमुख देश के रूप में विश्व शान्ति के आदर्श को प्रमुखता दी है। नेहरू जी द्वारा पंचशील सिद्धान्त को गुटनिरपेक्षता के साथ जोड़ना इस बात का पक्का प्रमाण है कि भारत विश्व शान्ति के काफी संवेदनशील व जागरूक रहा है।
- (4) " तृतीय विश्व के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करना (To present itself as an ideal before the Third World Countries) :- भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति को व्यावहारिक रूप देकर तीसरी दुनिया के देशों के सामने स्वयं को आदर्श रूप में पेश किया है। भारत ने हमेशा ही अपने पड़ोसी देशों के साथ शान्तिपूर्ण ढंग से आपसी विवाद हल करने को प्राथमिकता दी है। भारत व चीन के बीच पंचशील सिद्धान्त पर सहमति बनना इस बात का सबूत है कि भारत पड़ोसी देशों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों को प्राथमिकता देता रहा है।
- (5) नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विचार का समर्थन (To support the idea of New International Economic Order): भारत गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के माध्यम से गुटनिरपेक्ष देशों को इस आधार पर एकजुट करने में सफल रहा है कि वर्तमान विश्व आर्थिक व्यवस्था भेदभावपूर्ण व शोषण से भरी हुई है इसलिए विश्व के सभी देशों में न्यायपूर्ण समान आर्थिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए सम्पूर्ण विश्व की आर्थिक व्यवस्था या आर्थिक सम्बन्धों का पुनर्निर्धारण करना आवश्यक है।

निष्कर्ष:-

उपरोक्त विवेचन के बाद कहा जा सकता है कि शीत युद्ध के विरोधी तथा उपनिवेशवाद व रंगभेद की नीति के विरोध के वातावरण से भारत के नेताओं में जन्म लेने वाला ग़टनिरपेक्ष आन्दोलन नव-उपनिवेशवाद विरोधी तथा विश्व शान्ति का प्रबल समर्थक बन गया और इसने मानवाधिकार की सुरक्षा, अन्तराष्ट्रीय आतंकवाद की समाप्ति तथा नई अन्तराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की स्थापना की दिशा में सकारात्मक प्रयास किए। भारत ने ग़टनिरपेक्ष आन्दोलन के माध्यम से न केवल अपने आत्मसम्मान की रक्षा की बल्कि तीसरी दुनिया के देशों को शीत युद्ध की चपेट से भी बचाया और उनकी स्वाधीनता की रक्षा की। भारत की ग़टनिरपेक्षता की नीति व अन्तराष्ट्रीय मंच पर किए गए शांतिपूर्ण प्रयासों ने विश्व को तीसरे विश्वयुद्ध से बचाया। इस आन्दोलन के माध्यम से भारत ने व जातीय हिंसा व उपनिवेशवाद की हर रूप में निन्दा की। इस आन्दोलन के मंच पर भारत ने अन्तराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की स्थापना के लिए तीसरी दुनिया के देशों का ध्यान आकृष्ट किया और परमाणु बलेकमेलिंग से उनकी रक्षा की।